श्री राम महिमा श्री राम महिमा श्री राम महिमा श्री राम महिमा श्री राम महिमा श्री राम महिमा

श्री राम महिमा

''श्री बाल स्वरूप आनन्द साईं''

रूप तेरा ये साईं मेरे,
तेरो है ये नाम ।
नाम होए ये सार्थक,
हे प्रभु पूरन काम ।।

१६ जनवरी १९१९ १५ नवम्बर १९९४

श्री राम महिमा

(नित्य पारायण के लिए भगवान श्री रामजी की स्तुति)

''कलजुग जोग न जग न ज्ञाना।
एक आधार राम गुण गाना।।''

गुसाईं तुलसीदास जी

समर्पण

सच्चिदानन्द भगवान श्री रामचन्द्र जी की स्तुति में लिखे हुए श्रद्धा के ये फूल, मैं ब्रह्मलीन श्री सत्गुरु महाराज श्री १०८ स्वामी सीतारामदासजी महाराज को अर्पण करता हूँ।

श्री रघुनाथजी की भक्ति की साक्षात मूर्त, पूर्ण योगी और कामिल गुरु, श्री गुरुदेव १६३ वर्ष तक जगत् में जगह-जगह घूम-घूम कर अपनी निर्मल वाणी और श्री राम नाम के अमृत उपदेश का जगत् में प्रचार करते रहे।

रामटेक (जिला-नागपुर) और माण्डला (मध्य प्रदेश) में आप के आश्रम श्रद्धालु भक्तों और परमार्थी सज्जनों के लिए तीर्थ स्थान बन चुके हैं।

श्री राम जय राम जय जय राम

मनोभाव

पहले मैं श्री गुरु महाराज के चरण कमलों को नमस्कार करता हूँ जिनकी कृपा से मेरे मन में जगत् के मूल आधार श्री रघुनाथजी की अस्तुति लिखने का उत्साह पैदा हुआ। जो कुछ भी मैं लिख पाया हूँ वो परम् पूज्य गुरु महाराज श्री स्वामी जी की दया है।

सब वेद शास्त्रों और धर्म ग्रंथों का सार है कि कलयुग में केवल राम नाम का स्मरण और प्रभु श्री रामचन्द्र जी की महिमा का श्रवण करने से ही मनुष्य मात्र का कल्याण हो सकता है।

परंतु किसमें सामर्थ्य है जो जगत् के स्वामी सीतापति प्रभु श्री रामचन्द्र जी की अपार महिमा का वर्णन कर सके, जिनके गुणों का बयान भगवान शंकर, ब्रह्मा, वेद, शास्त्र और शेष जी भी न कर सके। देवता, ऋषि, मुनि और सिद्ध लोग जिनको नेति नेति कहकर पुकारते हैं, जिनका सच्चिदानन्द स्वरूप मन बुद्धि और इन्द्रियों की समझ से बहुत ही परे है और जिनकी माया एक इशारे से ही हजारों ब्रह्मांडों को पैदा और नाश कर देती है- भला मुझ मोह में फंसे हुए अज्ञानी जीव में यह शक्ति कहाँ कि ऐसे महान् प्रभु की महिमा का एक अंश भी बयान कर सकूं।

प्रभु श्री रामचन्द्र जी की महिमा अपरम्पार है। वैसे ही प्रभु की करुणा और कृपालता बेमिसाल है। प्रभु

स्वाभाविक ही अपने भक्तों पर सदा दयाल रहते हैं। करुणा मेरे प्रभु की ऐसी है की गज-ग्राह युद्ध में जब गज ने सब तरफ से निराश होकर सच्चे दिल से पुकार की, तो शब्द "रा" तो उसने रोते समय पुकारा और शब्द "म" मग्न यानि खुशी की हालत में। प्रभु का नाम अभी वह पूरा भी न ले पाया था कि करुणा-सिन्धु भगवान् उसकी रक्षा को पहुँच गये। उन से बढ़कर कोमल चित्त और दीन दुखियों पर दया करने वाला स्वामी भला कौन हो सकता है?

हे मन, तू बहुत ही कुटिल और कठोर है जो ऐसे दयालु प्रभु के भजन को छोड़ कर संसारी विषयों की तरफ भागता है।

जगत् जननी माता पार्वती को श्री राम चरित्र मानस सुनाते हुए भगवान् शिव बार बार कहते हैं कि हे भवानी! जो अभागे प्राणी दुर्लभ मानुष जन्म पाकर कृपालु प्रभु श्री रामचन्द्र जी का भजन नहीं करते वे महामूढ़ लोक परलोक में कभी सुख नहीं पाते।

हे पतित पावन, भक्त वत्सल, करुणाकर प्रभु! मैं सच्चे मन से बारम्बार आपसे यही वरदान माँगता हूँ कि चाहे जहाँ भी रखो-धरती पर या पाताल में, स्वर्ग में या नर्क में; हे नाथ! आपका ध्यान और चिन्तन एक पल के लिए भी न छूटे और जहाँ और जैसे भी रहूँ आपकी प्यारी मूरत सदा मेरे मन में बसी रहे।

"बोलो सियापति रामचन्द्र की जय"

"सतगुरुनाथ महाराज की जय"

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।।
ॐ श्री राम साईं राम जय साईं राम।।
राम मिलें न बरत में राम न तीर्थ नहाये।। राम
सदा तिस को मिलें राम शरण जो जाये।। राम
मिलें न दान में नाहीं तप इशनान।। राम मिलें
घट ही के भीतर साईं बताये ज्ञान।। खोजत
खोजत थक गये पाया वार न पार।। अन्दर से
बाबा कहे अपनी ओर निहार।। बाबा घट से यूं

कहे सुन रे बालक बात।। राम तुम्हारे पास हैं कहे इत उत जात।। ॐ श्री सीतावल्लभाय नमः।।१।। धनुष बाण को छोड़ के पात्र लीनो हाथ।। सीतानाथ हमारे देखो बने हैं साईंनाथ।।२।। ॐ श्री रामाय नमः।। हे प्यारे बजरंग बली महावीर हनुमान।। चरण कमल का आसरा दीजो हम को दान।। सन्त सभी गाएँ सदा महिमा तेरी अपार।। चरण शरण में राखिये

हम को पवन कुमार।। तुमरी किर्पा के बिना भक्ति न पावे कोय।। सच्ची भक्ति दो हमें सफल जनम् तब होय।। राम भक्ति सुखदायिनी कीजो हमें प्रदान।। राम प्रेम से ही मिले निर्मल ब्रह्म ज्ञान।। तुमरी किर्पा से तुम्हें सिमरें आठों याम।। स्वास स्वांस मुख से कहें जय जय जय श्रीराम।। ॐ श्री हनुमन्ताय नमः।।३।। ॐ साईं राम जय साईं राम।। पंच अमृत।।

राम राम भजो मन मेरे।। कल कलेश मिट जाएँ तेरे।। राम राम आधार बनाओ।। सिमरो राम सदा सुख पाओ।। राम नाम राखो मन माहीं।। नाम बिना दुख जावत नाहीं।। राम राम की धुनि लगाओ।। आप जपो और नाम जपाओ।। राम नाम से लागे प्रीत।। व्यर्थ गई अरबला बीत।। घट घट में है राम समाया।। धन्य धन्य जिन राम ध्याया।।(१)।। राम की मूरत मन में राखो।।

राम नाम जप अमृत चाखो।। राम की लीला मन में धारो।। निशदिन राम राम वीचारो।। राम की महिमा सन्त जन गावें।। सुर नर मुनि सब ध्यान लगावें।। राम ही जिया जन्त के दाता।। राम ही पालनहार विधाता।। सिमरें ध्यावें सिद्ध मुनीश्वर।। राम ही सर्व जगत् के ईश्वर।। जिन जिन भजा राम रघुराया।। तिन तिन प्रभु अविनाशी पाया।।(२)।। राघव जी से नाता

जोड़ो।। विषय वासना से मुँह मोड़ो।। राघव जी से प्रीत लगाओ।। केवल रघुवर को अपनाओ।। राघव जी को हर दम ध्याओ।। राम जपो और मस्ती पाओ।। राघव जी के चरित्र अनेक।। हर दम ले रघुवर की टेक।। राघव जी की अचरज माया।। जल थल में है आप समाया।। राघव जी को सो जन पावें।। चरण कमल जो हृदय बसावें।।(३)।। रघुवर को तुम जानो साथ।।

करुणामय अनाथ के नाथ।। रघुवर निर्धन के हैं धन।। सौंप प्रभु को अपना मन।। रघुवर निर्बल के हैं बल।। प्रभु के मार्ग पर तू चल।। रघुवर की लीला सब जान।। आपन को न कर्ता मान।। रघुवर सब के पालनहार।। राम की महिमा अपरम्पार।। रघुवर जिन को आप जनावें।। निर्मल मन परम् पद पावें।।(४)।। राम राघव सच्चिदानन्द।। नाम से पाओ परमानन्द।।

राम राघव दीनदयाल।। बिन कारण प्रभु होयें कृपाल।। राम राघव पतित उद्धार।। राम राम भज बारम्बार।। राम राघव सर्वव्यापी।। जो सिमरे काटे जम फासी।। राम राघव प्रभु अविनाशी।। भक्त वत्सल घट घट वासी।। राम राघव ब्रह्म अनन्ता।। हर जा बसे आप भगवन्ता।।(५)।। यह पंच अमृत जो सद् गावें।। ता के हृदय राम समावें।। मन के रोग सभी मिट

जावें।। रघुवर चरण कमल रज पावें।। जय सियाराम जय जय सियाराम।। जय सियाराम जय जय साईंराम।।४।। ॐ साईं रघुविन्द्राय नमः।। मेरे मन में बसो निरंतर मेरे राम हज़ूर।। मैं हूँ चरण कमल का भँवरा कीजो शरधा पूर।। आओ मेरे प्राण प्यारे रघुवर कौशल राज।। घट घट तुमरे दरस निहारूं राम गरीब निवाज।। तुमरे बिरह में सुध बुध भूली तड़प रहे हैं नैन।। भीतर

बाहर नीर बहावें कबहुँ न आवत चैन।। किरपा सागर करुणासिन्धु मोहे क्यों बिसराया।। बाल तुम्हारा भया बाँवरा सुध लीजो रघुराया।। ॐ श्री जानकीवल्लभाय नमः।।५।। ॐ साईं रघुराय नमः।। स्वास स्वास में सिमरूं तुझ को बार बार बल जाऊँ।। तुझ बिन मेरा कोई न राघव जिस को मैं अपनाऊँ।। ऊठत बैठत तुम्हें अराधूं आठ पहर गुण गाऊँ।। राम राम की मधुर धुनि में

अन्तर में खो जाऊँ।। जो पहनाओ सोई पहनूँ जित राखो तित जाऊँ।। कर्ता धर्ता तुम ही जानूँ तेरा दीया खाऊँ।। तुम ठाकुर तुम साहिब मेरो तुमरो हुकम बजाऊँ।। हे राघव मैं तेरो तेरो चरण शरण सुख पाऊँ।। ॐ राम नारायणम्।। जय साईं नारायण्।।६।। राम कृष्ण हरी।। साईं कृष्ण हरी।।७।। ॐ श्री रामचन्द्राय नमः।। राम के प्यारे राम कहो करो राम संग प्रीत।। बिर्था

जनम् गंवाये बांवरे कौन तुम्हारो मीत।। सकल जगत् में राम निहारो गाओ प्रेम के गीत।। राम में अपना आप गंवाओ यही प्रीत की रीत।। मोह माया ने सुध भुलाई गई उमरिया बीत।। राम दया से जान लियो अब मन जीते जग जीत।। ॐ साईं रामाय नमः।।८।। ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।। ॐ श्री राम साईं राम जय साईं राम।। भज ले राम नाम तू बन्दे राम सिमरने

आया है।। विषयों के बन्धन में पड़ कर अपना साईं भुलाया है।। माया जोड़ी उमर गंवायी राम शरण नहीं आया है।। जग की ऐसी रीत है प्यारे जो आया भरमाया है।। सुर नर मुनि नित जिसे ध्यावें वेदों ने यश गाया है।। बिसर गया तू रघुवर सोई जिस ने जगत् रचाया है।। मैं और मेरा तू और तेरा ये सब उस की माया है।। देख रे मनुवा हर प्राणी में राम ही राम समाया है।। ॐ श्री

सीतावल्लभाय नमः।।९।। कलयुग में श्री राम प्रभु मेरे बाबा बन कर आयो।। बच्चों के सर्वस्व पिता श्री साईंनाथ कहायो।।१०।। ॐ श्री रामभद्राय नमः।। जप ले राम नाम तू प्राणी फिर पाछे पछतायेगा।। विषयों से मुँह मोड़ रे मूरख तब ही राम रिझायेगा।। बाहर छोड़ अन्दर चल भाई अन्दर राम को पायेगा।। नौ द्वारे बन्द करे तो दसवाँ दर खुल जायेगा।। तन मन में श्रीराम

रमें जब काम तेरा बन जायेगा।। सत्गुरु ने ये सीख सिखाई राम सिमर तर जाएगा।। ॐ साईं रामाय नमः।।११।। राम नाम बोल।। सुच्चे मोती रोल।।१२।। ॐ श्री रामचन्द्राय नमः।। एक भरोसा राम का दूजा नाहीं हो।। राघव रघुवर रामचन्द्र मेरे साईं सो।। काहे हीरा जनम् तू प्राणी दीजै खो।। राम नाम के जाप से निज पापन को धो।। जा में राम को पावई सोई करम् करो।।

राम शरण में जाय के पूरण आनन्द लो।। जग की आशा छोड़ कर राम भजे नित जो।। पावन ता के दरस से सफल जीवन हो।। ॐ साईं राम जै साईं राम।।१३।। श्री राम गायत्री।। ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामा प्रचोदयात्।। मैं पापी तू पतित उद्धारन तू स्वामी मैं बाल तेरा।। तुम मेरे प्रीतम तुम ही देवा तुझ बिन जग में कौन मेरा।। निर्धन के धन

निर्बल के बल सब जग के आधार हो तुम।।
तुझ बिन बिगड़ी कौन बनाए पार उतारनहार हो
तुम।। मन मन्दिर में करो बसेरा निशदिन दर्शन
पाऊँ मैं।। राम राघव राम राघव राम राघव गाऊँ
मैं।। मैं हूँ तेरा तेरा रघुवर मोहे और किसी से
काम नहीं।। इस बालक ने देख लिया श्रीराम
बिना आराम नहीं।। श्रीमद् रामचन्द्र चरणऊ
शरणम् प्रपध्ये श्रीरामचन्द्राय नमः।।१४।।

ॐ साईं रघुविन्द्राय नमः।। अब सुन लो मोरी पुकार रघुवर सुन लो मोरी पुकार।। पाँच दोष दिन रैन सतावें कैसे हो छुटकार।। सूझ बूझ नहीं रहन देत हैं नाहीं कछु विचार।। दिन दहाड़े ये लूट मचावें देख मेरी सरकार।। तिगनी का मोहे नाच नचावें हुआ बहुत लाचार।। पल पल छिन छिन दें हिचकोले किस बिध उतरूँ पार।। सब आशा अब छोड़ के स्वामी आया तोरे द्वार।। बाल

तुम्हारा देत दुहाई राखो राखनहार।। ॐ श्री जानकीवल्लभाय नमः।।१५।। ॐ साईं रघुराय नमः।। जब प्यार हुआ रघुनन्दन से तब जग से प्रीत लगाना क्या।। जब शरण प्रभु की आ ही गये तब अपना आप मिटाना क्या।। जब मन मन्दिर श्री राम बसें तब बाहर तीर्थ नहाना क्या।। जब घट घट में वो रम ही रहा तब मन्दिर द्वारे जाना क्या।। जब राम बिना कुछ है ही नहीं

तब मन के भरम भुलाना क्या।। जब प्रेम की धारा बह निकले तब ढूँढन राम को जाना क्या।। जब सत्गुरु पूरे मिल ही गये तब अपना और ठिकाना क्या।। जब सदा रे मनुवा सिमरे तू तब राम रंग रंग जाना क्या।। जय सियाराम जय जय सियाराम।। जय सियाराम जय जय साईं राम।।१६।। ॐ श्री राम भद्राय नमः।। राम भजन तू कर ले मनुवा वेदों का ये सार।। हर दम

राम सिमर मन माहीं हो जाए बेड़ा पार।। राम ही कारन राम ही कर्ता राम ही सत् करतार।। राम ही तारन राम ही तराता राम ही पतित उद्धार।। राम ही तत् है राम ही सत् है राम ही पालनहार।। राम हैं पारब्रह्म परमेश्वर लीलामय अपार।। राम की महिमा कही न जाए थक गये लिखनहार।। नेति नेति कहें सन्त जन अन्त न पारावार।। शरण राम की ले रे मनुवा मिथ्या ये

संसार।। जन्म जन्म के भाग्य हैं जागे तू आया राम के द्वार।। ॐ राम नारायणम्।। जय साईं नारायणम्।।१७।। ॐ साईं रघुराय नमः।। चलो सखी मिल राम नाम गुण गायें।। रघुवर की हम लीला गा कर सत् चित्त आनन्द पायें।। प्रभु की ज्योत जले घट माहीं निशदिन ध्यान लगायें।। सुरत शब्द एकाग्र कर के परमानन्द अपनायें।। राम की धुनि लगा कर सजनी जन्म

सफल बनायें।। राघव जी के चरण कमल पे बलिहारी हम जायें।। राम राम भजें मन अन्दर राम में ही खो जायें।। अन्त समय में राघव जी में ज्योति ज्योत समायें।। चलो सखी मिल राम नाम गुण गायें।। ॐ श्री सीतावल्लभाय नमः।।१८।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।१९।। ॐ श्री रामचन्द्राय नमः।। राम भजन बिन सुन

रे प्राणी गत ना तेरी होए।। स्वास स्वास तू सिमरन कर ले सिमर सिमर प्रभु सोए।। कलयुग में आधार है ये ही और न साधन कोये।। पल पल क्षण क्षण राम राम जप राम मिलेंगे तोहे।। राम नाम के बिना मूढ़ मन जो पावे सो खोये।। राम भजन बिन अन्त समय में सर पकड़ कर रोये।। जो भी प्राणी सुख को चाहे बीज नाम का बोए।। जन्म जन्म ता का फल पावे करनी उत्तम

होए।। राम की माया सूत समझ ले उस में जगत् परोये।। सिमर रे मनुवा राम राम तू सब पापों को धोये।। ॐ साईं रामाय नमः।।२०।। राम नाम जप।। भव सिन्धु टप।।२१।। ॐ साईं राम जय साईं राम।। सखी री मैं किस बिध राम को पाऊँ।। जग के झूठे धन्दे छोड़ूँ अन्दर में खो जाऊँ।। अन्दर बसे हैं राम रमैय्या उन के दर्शन पाऊँ।। राम ही सिमरूँ राम ही पूजूँ राम ही मैं

ध्याऊँ।। गुरु की ओट रखूँ मैं मन में राम नाम नित गाऊँ।। आँख मचोली करे मेरा साजन मैं बलिहारी जाऊँ।। पल भर रूठे प्रीतम मुझ से नैनन नीर बहाऊँ।। जन्म जन्म से तरस रही मैं अब परमानन्द पाऊँ।। सखी री मैं किस बिध राम को पाऊँ।। ॐ साईं रघुराय नमः।।२२।। ॐ ह्रीं ह्रीं रामाय नमः।। राम नाम का आनन्द ले क्यों बिरथा जनम् गँवाये।। राम भजन तू कर ले प्राणी

आदर से घर जाये।। सच्चा है वो साहिब मेरा सच्चा उस का नाम।। नौ खण्डों में बसता वो ही हर जा उस का धाम।। सरगुण निर्गुण ब्रह्म अनन्ता अविनाशी श्री राम।। अजय अजन्मा प्रभु भगवन्ता साकार स्वरूप श्याम।। दया निकेतन अंतरयामी पुरुषोत्तम रघुराये।। जा पर किर्पा करें मेरे स्वामी भव सागर से तर जाये।। राम नाम सब सुख का दाता कामधेनु ये गाय।।

सिमर रे मनुवा राम राम तू सब कल कलेश मिट जाय।। ॐ श्री जानकीवल्लभाय नमः।।२३।। ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।। ॐ श्री राम साईं राम जय साईं राम।। राम बिना मैं हुई दीवानी निशदिन करूँ पुकार।। किधर बसत हो रघुवर मोरे कहाँ है तोरा द्वार।। जनम् जनम् से ढूँढ रही मैं तुझ को प्राण आधार।। भेद ज़रा न पाया तेरा मान गई अब हार।। बख्शनहार अपार

स्वामी दरस देयो इस बार।। सूखी इस फुलवारी में फिर से आ जाए बहार।। लाखों पापी तारे तुम ने तारी गौतम नार।। चरण कमल पे पड़ी भिखारिन दया करो दातार।। श्रीमद् रामचन्द्र चरणऊ शरणम् प्रपध्ये श्री रामचन्द्राय नमः।।२४।। ॐ श्री रामाय नमः।। राम नाम चित्त लागे।। मोह माया से जागे।। विषयों से दूर भागे।। पाप करम त्यागे।। मन हरी चरणों में

लागे।। मेरे सोए भाग्य जागे।। राम नाम नित ध्याऊँ।। मन मन्दिर राम बिठाऊँ।। प्रभु चरणन सुख पाऊँ।। हर समय ध्यान लगाऊँ।। राघव की छबि बिराजे।। मेरे सोए भाग्य जागे।। पी राम नाम का अमृत।। सो जानै जिन लिया रस।। ऊठत बैठत सिमरत।। तिन हर लीला गाई बस।। नाहत के ढोल बाजे।। मेरे सोए भाग्य जागे।। राम नाम चित्त लागे।। मेरे सोए भाग्य जागे।।

ॐ श्री रामभद्राय नमः।।२५।। राम नाम भज।। झूठे जग को तज।।२६।। श्री राम गायत्री।। ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामा प्रचोदयात्।। अन्दर की ज्योत जले।। बाहर हैं तूफान।। बिगड़े हैं इन्सान।। पैसे की झूठी शान।। बस माया ही परवान।। हम इन से दूर भले।। अन्दर की ज्योत जले।। चल रंग महल के अन्दर।। पट बाहर के सब बन्द कर।। विषयों से

ध्यान हटा कर।। अखियों के बीच जमा कर।।
शरण राम की ले।। अन्दर की ज्योत जले।। राघव
की कथा सुना कर।। प्यारे की लीला गा कर।।
हृदय में उसे बसा कर। रट राम राम लगा कर।।
भव सागर से तर ले।। अन्दर की ज्योत जले।।
ॐ श्री रामचन्द्राय नमः।।२७।। श्री राम राम
रमेति रमे रामे मनोरमे।। सहस्र नाम ततुल्यम् श्री
राम नाम वरानने।। मैं तेरे रंग में रंगा राम जी

तेरे रंग में रंगा।। तोहे सब में देखूँ समझ न आवे कौन बुरा कौन चंगा।। सुन्दर सब से रूप है तेरा सुन्दर तेरी काया।। हर जा तेरा नाम सुहावे हर जा तेरी छाया।। अन्दर बाहर ऊपर नीचे सब जा तेरी माया।। सुन रे मनुवा बात है सच्ची हर जा राम समाया।। धो ले मन की मैल ये अपनी बहे राम नाम की गंगा।। मैं तेरे रंग में रंगा राम जी तेरे रंग में रंगा।। जय सियाराम जय जय

सियाराम।। जय सियाराम जय जय साईं राम।।२८।। ॐ ह्रीं ह्रीं रामाय नमः।। कुछ राम बिना ना भावे।। माया का ये रंग तमाशा मुझ को ना तरसावे।। जग का ये सब पाप पलायन मन को ना भरमावे।। जिया जन्त का दाता वोही हर जा राम समावे।। सर्व कला समर्थ स्वामी अपना खेल खिलावे।। जन्म जन्म सब साधन कर के भक्ति राम की पावे।। जिस पर उस की

किर्पा होवे उस को आप जनावे।। छल कपट से बच रे मनुवा ये हैं सब छलावे।। मन को कर तू इतना निर्मल ता तू राम को पावे।। कुछ राम बिना ना भावे।। ॐ श्री सीतावल्लभाय नमः।।२९।। ॐ साईं राम जै साईं राम।। मेरे रघुवर अब मोहे दरस दिखायो।। फंसी मोरी नैय्या भंवर में इस को पार लगायो।। विषयों की है नदिया गहरी दूर है किनारा।। चली है काम

क्रोध की आंधी डोलत हूँ मँझधारा।। चारों ओर हैं ढूँढत अखियाँ दिखे न प्रीतम प्यारा।। मोरी नैय्या के तुम हो खिवैय्या प्रभु कीजो पार उतारा।। तड़पत हूँ मैं तोरे दर्शन को मोहे और न सतायो।। मेरे रघुवर अब मोहे दरस दिखायो।। ॐ साईं रघुविन्द्राय नमः।।३०।। ॐ श्री रामाय नमः।। ग़फलत मत तू कर ऐ बन्दे सिर पे खड़ा है काल।। राम नाम लेने तू आया डाले बहु

जंजाल।। गर्भ में जो प्रण किये थे भूल न मेरे लाल।। रात दिन विषयों में फंसा ये है माया जाल।। मन को ना तू गुरु बना अब इस की डोर सम्भाल।। पाप की गठड़ी सर पर रख कर होगा तू बेहाल।। सिमरन राम राम का कर ले भज रामचन्द्र किरपाल।। जनम् मरण के फन्दे छूटें जब रघुवर होएं दयाल।। नाम की धुनि लगा रे मनुवा अपने प्रण को पाल।। राघव जी के रंग

में तू हो जा मालामाल।। ॐ राम नारायणम्।।
जय साईं नारायणम्।।३१।। ॐ साईं राम जै
साईं राम।। मेरे राम जी तुम स्वामी हम दासा।।
दीनदयाल कृपाल स्वामी जिया जन्त के नाथा।।
मात पिता सखा और बन्धु तुम हमारे साथा।।
सर्वव्यापी प्रभु अविनाशी तुमरो घट घट वासा।।
अन्तरयामी सब के स्वामी जग ज्योति
पर्काशा।। राम नाम दीजो प्रभु मेरे तुम हो पाप

विनाशा।। राम नाम नित सिमरन कर के पूरण होए आशा।। मन में बसे राम की मूरत जीवन की अभिलाषा।। ऊठत बैठत सोवत जागत हमरी ये अरदासा।। मेरे राम जी तुम स्वामी हम दासा।। श्रीमद् रामचन्द्र चरणऊ शरणम् प्रपध्ये श्री रामचन्द्राय नमः।।३२।। ॐ साईं रघुराय नमः।। सम्भल सम्भल सम्भल ऐ बन्दे क्यों परलोक गंवाए।। सुन है बात समझने की क्यों

मूरख मन भरमाए।। देख देख देख सामने माया जाल बिछाये।। विषयों से तू ध्यान हटा कर राम से लव लगाये।। बोल बोल बोल रे मनुवा मीठे बोल हैं भाये।। राम बिना है बानी फीकी राम ही मधुर बनाये।। सुन सुन सुन रे प्राणी राम की धुन लुभाये।। मन में रख कर राम की मूरत नाहद में खो जाये।। सिमर सिमर सिमर रे मनुवा घट में राम समाये।। सिमरे जा तू अन्त समय तक

प्रीत की रीत निभाये।। ॐ श्री रामचन्द्राय नमः।।३३।। राम राघव राम राघव राम राघव पाहिमाम्।। कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव रक्षमाम्।।३४।। ॐ ह्रीं ह्रीं रामाय नमः।। मेरो रोम रोम श्री राम पुकारे राम मिला दो कोई।। रो रो अखियां हुईं व्याकुल कौन करे दिलजोई।। कोई कहे ये हुआ दीवाना कोई कहे निरमोही।। अपने कहें ये है बेगाना भेद ना जाने कोई।। मन

है घायल अखियां तरसें कैसी दशा ये होई।। दास तुम्हारे ने मेरे प्रभु जी सुध बुद्ध है खोई।। ॐ श्री जानकीवल्लभाय नमः।।३५।। प्रातःकाल उठते समय की प्रार्थना।। सुबह हुई मेरे राघव जी मैं चरण कमल नमस्कारूँ।। मन कर्म वचन से शरणागत् हूँ आप को ही आधारूँ।। आप की ओट रखूँ मैं मन में आप को सदा चितारूँ।। आप के मार्ग पे प्रभु चल के अपना आप संवारूँ।। जग

के सारे धन्दे करूँ मैं आप को नहीं बिसारूँ।। मन में बसे आप की मूरत हर दम राम पुकारूँ।।३६।। रात को सोते समय की प्रार्थना।। दिन बीता अब रात हुई मन सिमर प्रभु का नाम।। हरी चरणों में ध्यान लगा कर बोल राम श्रीराम।। दिन भर में जो भूल हुई मन कर्म वचन से ऐ मालिक।। वो क्षमा करो कृपा सागर हे जग पावन हे जग पालक।। हर दिन बीते प्रभु

सिमरन में हर रात राम के चिन्तन में।। इक घड़ी न बिसरे राम मुझे बाँधूं मैं प्रेम के बन्धन में।।३७।। भोजन करते समय की प्रार्थना।। सकल पदार्थ भोजन पाऊँ।। राघव जी के गुण मैं गाऊँ।। शुकर शुकर शुकर मेरे दाता।। दीनदयाल किरपाल विधाता।।३८।। अपने अपराध क्षमा कराने के लिए प्रार्थना।। जय जय साईं राम उजागर।। क्षमा क्षमा क्षमा सागर।। जय

जय आदि भवानी अम्बे।। क्षमा क्षमासागर जगदम्बे।।३९।।

ॐ श्रीराम जय राम जय जय राम।।

ॐ श्रीराम साईं राम जय साईं राम।।

श्री रघुनाथ जी की आरती

(ॐ जै जगदीश हरे ..... की सुर पर)

ॐ जै जानकीनाथा प्रभु जै जानकीनाथा।
सर्व जगत् सब प्राणी सब तेरो हाथा।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

चरण कमल से निकली गंगा की धारा।
गंगा जी की महिमा जाने जग सारा।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

सूरज वंश लियो अवतारा जग पावन कीनो।
सुन्दर नर लीला कर भक्तन सुख दीनो।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

पारब्रह्म परमेश्वर सबके पितु माता।
मंगल करनी तेरी सन्तन सुख दाता।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

नाम तेरा ले लेकर पार होएँ प्राणी।
नाम तेरे में रमते पूरन ब्रह्मज्ञानी।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

रघुकुल वंशमनी की आरती जो गावे।
राम कृपा से सो जन सुख सन्मति पावे।।
ॐ जै जानकीनाथा।।

''राम नाम का गुप्त तत्व''

राम नाम तीन बीज अक्षरों से मिलकर बना है।

पहला अक्षर है ''र'' जो अग्नि का बीज अक्षर है। 'र' की आवाज़ में भी अग्नि का बीज है। और इस सूक्ष्म अग्नि का काम है हजारों जन्मों के पापों और खोटे संस्कारों को जलाकर राख कर देना।

''अ'' अक्षर सूर्य का बीज अक्षर है, जिसका काम है कोटि जन्मों के कर्मों के परिणाम स्वरूप अंधकार को दूर कर के अंतरंग और बहिरांग में प्रकाश कर देना।

''म'' बीज अक्षर है चन्द्रमा का। चन्द्रमा शीतलता प्रदान करता है, जो जन्मांतर के पापों की अग्नि को शान्त कर देता है।

ये तीनों बीज अक्षर मिलाकर ''राम'' नाम बनता है। जिस का अर्थ है सर्वकला पूर्ण आत्मा और इस शब्द का साकार रूप हैं प्रभु श्री राम, बाबा साईंनाथ।

''ॐ श्री साईं''